दीनदयाल जी ने अपने आदर्शों के प्रचार के लिए 'राष्ट्रधर्म प्रकाशन' की नींव डाली। फिर 'पांचजन्य' साप्ताहिक और 'स्वदेश' दैनिक का भी प्रकाशन किया। आप किसी काम को छोटा या बड़ा नहीं समझते थे।